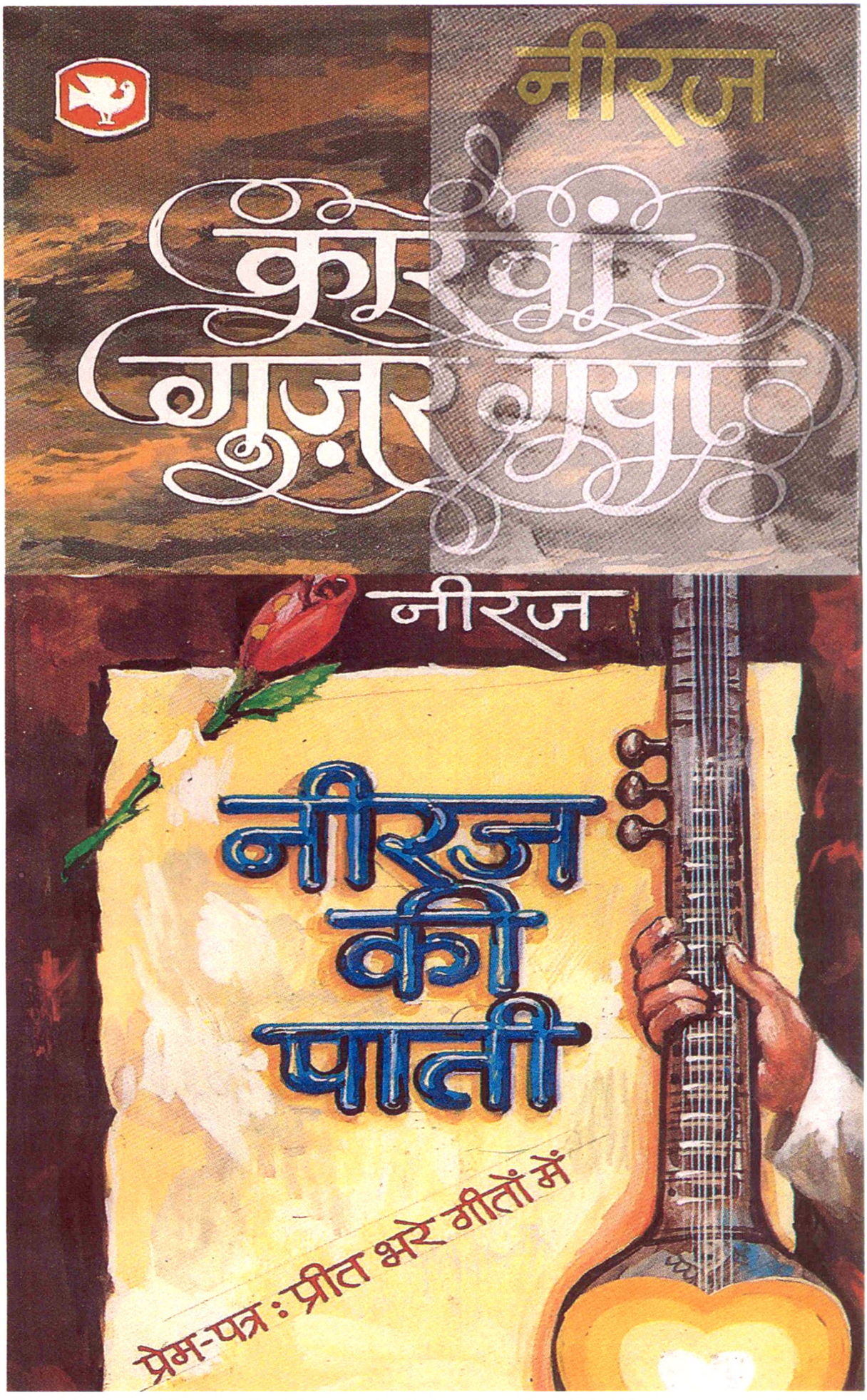

नीरज
कारवाँ गुज़र गया

नीरज
नीरज की पाती
प्रेम-पत्र : प्रीत भरे गीतों में

प्राक्कथन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात अनुसंधान के प्रति मेरा आकर्षण और जिज्ञासा बढती ही जा रही थी। इसी बीच मैंने नीरज का 'संघर्ष' काव्य संग्रह पढा तब मैं बहुत प्रभावित हुआ। 'संघर्ष' में संकलित कविताओं में उनकी वैयक्तिक अनुभूतियों की ही सहज अभिव्यंजना हुई है और इस काव्यकृति का नामकरण 'संघर्ष' भी बहुत कुछ अंशों में अर्थपूर्ण है। इसी विषय को लेकर अपनी जिज्ञासा मैंने श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. सरदार मुजावरजी, (प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, किसनवीर महाविद्यालय, वाई) के पास प्रकट की। मेरी अध्ययन की रूचि और पूर्णानुभव को ध्यान में रखकर आपने मुझे नीरज का काव्य पढने के लिए कहा। इसके बाद नीरज का 'कारवाँ गुजर गया','नीरज की पाती' आदि काव्य संग्रह मैं पढता गया। उनका काव्य पढने के उपरांत परिलक्षित हुआ कि नीरज के काव्य में ग़ज़ल प्रभावी है। इस बात का जिक्र मैंने अपने गुरूवर्य डॉ. सरदार मुजावरजी के पास किया।

अतः इस विषयपर विचार - विमर्श कर " नीरज की ग़ज़लों का अध्ययन " इस शीर्षक को लेकर विषय निश्चित किया।

प्रस्तुत शोध विषय के अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उठे थे।

1) नीरज का व्यक्तित्व तथा कृतित्व कैसा रहा है ?

2) क्या नीरज का काव्य उनके समकालीन जीवन से प्रभावित है ?

3) नीरज के काव्य की मूल संवेदना तथा केंद्रिय तत्व क्या हैं ?

4) नीरज के काव्य में किन-किन समस्याओं का चित्रण मिलता है ?

नीरज के काव्य के अध्ययन के पश्चात मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए। उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध - प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रस्तुत शोध - विषय की सीमा और व्याप्ति :

वस्तुतः शोध गहन अध्ययन का विषय है। जिसमें परिश्रम के साथ सुनियोजन की भी आवश्यकता होती है। तात्पर्य, हर शोध - विषय की अपनी सीमा और व्याप्ति निर्धारित होती है और होनी चाहिए। तभी शोध कार्य सुचारू रूप से संपन्न होता है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु - शोध - प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय - ''नीरज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

इस अध्याय के अंतर्गत गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को तलाशने का प्रयास किया है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संक्षिप्त परिचय में उनका जन्म, शिक्षा, नौकरियाँ से लेकर उनके काव्य की विशेषताओं का चित्रण किया गया है।

द्‌वितीय अध्याय - ''नीरज के प्रमुख काव्य संग्रहों का परिचय''

प्रस्तुत अध्याय में नीरज जी के प्रमुख काव्य संग्रहों का परिचय दिया गया हैं। हर काव्य संग्रह का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। महत्वपूर्ण जानकारी को पाठकों के सम्मुख रखकर रचना पर खुलकर चर्चा की है। साथ ही काव्य संग्रह में संकलित कविताओं के नाम भी दिए गये हैं।

तृतीय अध्याय - ''ग़ज़ल : सैद्‌धांतिक अध्ययन''

इस अध्याय में ग़ज़ल के प्रास्ताविक ज्ञान की चर्चा की है। साथ ही ग़ज़ल किसे कहते हैं ? ग़ज़ल की परिभाषा, ग़ज़ल का अर्थ, ग़ज़ल का स्वरूप, ग़ज़ल के प्रकार आदि विषयों पर चर्चा की गयी है। इसके अध्ययन के पश्चात पाठक ग़ज़ल को समझने में सक्षम हो जायेंगे।

चतुर्थ अध्याय - ''नीरज की ग़ज़लों की विषयवस्तु''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत नीरज जी की ग़ज़लों के विषयोंपर चर्चा की गयी है। सामाजिक चेतना, मानवतावादी विचारधारा, धोखाधडी, बेकारी, मृत्युदर्शन, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि, राष्ट्रीय भावना और प्रेमाभिव्यक्ति यह विषय प्रधान रूप से चर्चा में आ गये हैं। आम आदमी के दर्द का चित्रण नीरज जी की ग़ज़लों का उद्‌देश्य माना गया है।

पंचम अध्याय - ''नीरज की ग़ज़लों का शिल्पविधान''

इस अध्याय में नीरज की ग़ज़लों की भाषा, नीरज की ग़ज़लों में रदीफ - काफिया और नीरज की ग़ज़लों में संगीतात्मकता आदि विषयों का चित्रण किया

गया है। नीरज की ग़ज़लों का शिल्पविधान समझने के लिए इनकी जानकारी रखना आवश्यक माना जाता है।

अंत में 'उपसंहार' दिया है, जिसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धति से निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए हैं। इसके उपरांत आधार ग्रंथ सूची एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता

1. "नीरज की ग़ज़लों का अध्ययन" को केंद्रबिंदु मानकर इस लघु शोध - प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. नीरज की ग़ज़लों का गहराई से अध्ययन करके उसपर निष्कर्ष निकाले गये हैं।
3. प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध में नीरज जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का लेखा - जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
4. नीरज की ग़ज़लों में प्रेमाभिव्यक्ति को गौण स्थान देकर समाज के चित्रण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
5. नीरज की ग़ज़लें आम आदमी के दर्द का आईना हैं।

ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

'नीरज की ग़ज़लों का अध्ययन' इस लघु शोध - प्रबंध को सफल बनाने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग प्रदान करनेवाले हित - चिंतको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम - कर्तव्य मानता हूँ।

श्रद्ध्येय गुरूवर्य डॉ.श्री. सरदार मुजावर सरजी का अत्यन्त आभारी हूँ। आपके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के सहारे मैं अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ पाया हूँ। शोध - प्रबंध के विषय चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक आपका मार्गदर्शन मुझे सफलता की राह दिखाता रहा है। आपके प्रति आभार प्रकट करना अर्थात् कतरें ने समंदर की बात करने के बराबर है। मैं आपके आशिर्वाद की छाया में रहना ही पसंद करूंगा। दिल में यह चाह हमेशा रहेगी कि, आपका स्नेह मुझपर हमेशा बना रहे।

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के प्राचार्य सुहास साळुंखे जी ने इस शोध - कार्य के दौरान मुझे मार्गदर्शन किया और यह कार्य सफलता के साथ पूरा करने की प्रेरणा दी, इसलिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। इसी महाविद्यालय के डॉ. बी.डी. सगरे जी तथा प्रा. जयवंत जाधव जी ने समय - समय पर मार्गदर्शन किया, इसलिए उनके प्रति मैं आभारी हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथालय के ग्रंथपाल श्री. एल्.एन. कुंभार जी तथा उनके सभी कर्मचारियों ने इस शोध - कार्य के दौरान संदर्भ - ग्रंथ एवं पत्र - पत्रिकाएँ उपलब्ध करा दीं, इसलिए उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। प्रशासकीय कर्मचारी श्री. कागवाडे जी ने समय - समय पर हर तरह की सूचना उपलब्ध करायी, इसलिए उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ.श्री. शिवाजी विष्णू निकम सरजी ने लगभग सभी ग्रंथ मुझे अध्ययन के लिए दिए, लघु शोध - प्रबंध लिखने की शैली से अवगत कराया, समय - समय पर मुझे मार्गदर्शन किया और लगभग तीन - चार वर्षों सें वो मेरी प्रेरणा बन गए हैं। अतः मैं उनके आशिर्वाद की छाया में रहकर, उन्हींके बताये रास्तेपर चलना पसंद करूँगा।

डॉ. मधु खराटे जी ने फोनपर हुई बातचित के दरम्यान जो मौलिक मार्गदर्शन किया तथा आवश्यक सुझाव दिए, उसके लिए मैं सदैव उनका आभारी रहूँगा। सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड के ग्रंथालय द्वारा मिली सहायता के लिए मैं उनका आभारी हूँ। यशवंतराव चव्हाण नगरपरिषद वाचनालय, कराड के द्वारा मिले सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हूँ।

संध्या पाटील मॅडमजी के मार्गदर्शन ने मुझे धीरज दिया, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। कु. संदीप माने द्वारा मिली इंटरनेट की सारी जानकारी तथा टंकलेखन की सहायता के लिए मै उसे धन्यवाद दूँगा। श्री. विरेंद्र शुक्लजी विद्या प्रकाशन, कानपुर, श्री. सुर्यकांत निकम, श्री. उत्तमराव पाटील, श्री. तानाजी

पाटील और मेरे सभी दोस्तों से मिली प्रेरणा तथा सहायता के लिए मैं सदैव उनका आभारी रहूँगा।

मेरे बड़े भाई, माताजी और पिताजी के प्रेम, प्रोत्साहन और विश्वास के कारण ही मैं यहाँ तक पहुँच पाया हूँ। आशा करता हूँ कि, उनके सभी सपने साकार करने की क्षमता मुझमें आ जाए।

प्रशांत पाटील, संतोष मोहिते, आप्पासो मोरे, सुहास चव्हाण, सागर जाधव, संदीप जाधव, सुभाष जाधव, अमोल पाटील, वर्षा, जयश्री, सलमा और प्रतिभा द्वारा मिला सहयोग, प्रेरणा मेरे इरादों को मजबूत बनाती रही। उनकी दोस्ती हमेशा बनी रहें, यही मैं आशा करता हूँ। और उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

अर्चना नेट कॅफे और झेरॉक्स तथा प्रिंटींग प्रेस के सभी कर्मचारियों का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने वक्त पर यह काम पूरा करके मुझे सहयोग दिया। इस कार्य को सफल बनाने में जिन विद्वानों ने एवं स्वजनों ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की है, उनके प्रति आभार मानकर इस लघु शोध - प्रबंध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने प्रस्तुत करने का विनम्र साहस करता हूँ।

शोध - छात्र

Patil

(श्री. शरद तानाजीराव पाटील)

स्थान - सातारा

तिथि - 31/07/2008

अनुक्रमणिका